<u>जय बाबा</u>

<u>आदमी बन आया रे मौला</u>

(हज़रत सचल सरमस्त)

जिसे देखना ही मुहाल था, न था उसका नाम - ओ - निशाँ कहीं
सो हर एक जर्रे में इश्क ने हमें, उसका जलवा दिखा दिया ॥
खुदबिनो खुदशनास मिला, खुदनुमा मिला
इंसान के भेस में मुझे, अक्सर खुदा मिला ॥

-------- x -------

आदमी बन आया रे मौला, कैसा नाच नचायारे ढोला !!

देखो देखो री सखी, सबमे सवाया री बना
बना बनरी के लिए, कैसा बन्ना यार बन्ना !! आदमी !!

मेहेर बाबा कुतुब-ए-आलम। मज़हर-ए-नूर –ए-खुदा
मर्द –ए-हक़ इंसान-ए –कामिल। ***ताजदार-ए–दो सरा*** !! आदमी !!

हमको यां दर दर फिराया यार ने,
लामकाँन में घर बनाया यार ने
आप अपने देखने के वासते
हमको आईना बनाया यार ने !! आदमी !!

आईना देखने में नयी बात हो गई ॥ उनसे ही आज उनकी मुलाकात हो गई
उनकी निगाह में कोई जादू ज़रूर था ॥ जिसपर पडी उसीके जिगर में उतरगई
अब मेरी निगाहों में जचता नहीं कोई ॥ जैसे मेरे सरकार है ऐसा नहीं कोई !! आदमी !!

अपनी गोदी आपही खेले, बनकर मोहन लाला
आपही बोये, आपही सींचे, आप फिरे रखवाला रे ढोला
कैसा नाच नचायरे ढोला !!

[अपनी गोदी .....जो मुझमे बोलता है मै नहीं हूँ]
तू बस तू ..... तू बस तू ..... तू बस तू ..... तू बस तू

दैर मे तू, हरम में तू । अर्ष पे तू , ज़मीन पे तू

जिसकी पहुँच जहां तलक, उसकेलिये वहीं पे तू (Only Gopi) ॥ बस तू बस तू ॥

तू बस तू तू बस तू.....

तू दिलमे तो आताहै, समझ में नहीं आता

बस जानगया तेरी पहचान यही है ॥ बस जानगाया पहचान गया ॥

हैरान हूँ मेरे दिल में समाये हो किस तरह

हालके दोजहाँ में समाते नहीं हो तुम ॥ बस जानगाया पहचान गया ॥

अपनी गोदी आपही खेले .....

आपही बोये, ... !! कैसा नाच नचायरे ढोला !!

(अरे कैसा नाच नचाया....) (Only Gopi)

आपही भट्टी, आपही मद्घर, आपही होथ का लाला

आपही पीवे, आप पिलावे, आप फिरे मतवाला रे ढोला !! कैसा नाच नचायरे ढोला !!

कैसा नाच नचाया रे ढोला , कैसा नाच नचाया

कैसा नाच नचाया रे ढोला , कैसा नाच नचाया !! आदमी !!

दिखला रहे हैं जल्वे, खला-ओ-मला में आप,

ज़ाहिर है साफ़ सूरत –ए –अर्ज-ओ-समां में आप

आता है किसको रूप बदलना हुजूर का

सौ सौ तमाशे करते है एक एक अदा में आप

धोका मुझे न दीजिये पहचानता हूँ मै

हर आषना में आप है ना- आषना में आप !! आदमी !!

जर्रे , जर्रे, से अयाँ होने के बाद

आज तक राज़-ए -हकीकत राज़ है !! आदमी !!

******